दोहा– **चैत्यालय में चैत्य की, महिमा रही महान्।**
भवि जीवों का दर्श कर, होता है कल्याण॥

(इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

समुच्चय जाप्य–ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा– नव कोटी के साथ है, वन्दन मेरा त्रिकाल।
नव देवों की भाव से, गाते हम जयमाल॥

चौपाई

जय अरहंत देव जिन स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी।
चार घातिया कर्म नशाए, अतिशय केवल ज्ञान जगाए॥
जो हैं अष्ट कर्म के नाशी, होते हैं सिद्धालय वासी।
नित्य निरञ्जन हैं अविनाशी, जो हैं चेतन सुगुण प्रकाशी॥1॥

कहे गये जो पञ्चाचारी, छत्तिस मूलगुणों के धारी।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, परमेष्ठी आचार्य निराले॥
उपाध्याय आगम के ज्ञाता, भवि जीवों के ज्ञान प्रदाता।
ज्ञान ध्यान संयम तप धारी, सर्वपरिग्रह के परिहारी॥2॥

साधू वीतरागता पाए, विषयाशा से रहित कहाए।
जो आरम्भ परिग्रह त्यागी, होते हैं आतम अनुरागी॥
रत्नत्रय युत धर्म कहाए, वस्तु स्वभाव का ज्ञान कराए।
दश लक्षण संयुक्त जानिए, परम अहिंसामयी मानिए॥3॥

श्री जिनेन्द्र की पावन वाणी, आगम कहलाए जिनवाणी।
द्वादशांग जिनवाणी जानो, अंगबाह्य पूरबयुत मानो॥
अकृत्रिम जिन चैत्य कहाए, रत्नमयी शास्वत कहलाए।
कृत्रिम वीतराग शुभकारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी॥4॥

चैत्यालय में जिनवर सोहें, भक्तों के मन को जो मोहें।
घंटा तोरण सहित बताए, शिखर के ऊपर ध्वज लहराए॥
परम पूज्य नवदेव कहाते, नवकोटी से जो गुण गाते।
वे अपने सौभाग्य जगाते, अनुक्रम से शिव पदवी पाते॥5॥

दोहा– **नव देवों की भक्ति से, होवें कर्म विनाश।**
मन की इच्छा पूर्ण हो, हो शिवपुर में वास॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **पूजा से नवदेव की, बन जाते सब काम।**
अतः पूजते हम विशद, करके चरण प्रणाम॥

(इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य- खण्डे भारतदेशे दिल्ली प्रान्ते शकरपुर नगर स्थित श्री 1008 आदिनाथ दि. जैन मंदिर मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2539 वि.सं. 2070 मासोत्तम मासे भादौ मासे कृष्ण पक्षे बारसतिथि दिन सोमवासरे श्री लघु नवदेवता विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।